1

झारखण्ड : परिचय, उच्चावच तथा भौतिक स्वरूप

[JHARKHAND : INTRODUCTION, PHYSIOGRAPHY AND RELIEF]

झारखण्ड 21°59′ उत्तरी अक्षांश से 25°18′30″ उत्तरी अक्षांश तथा 83°20′ पूर्वी देशान्तर से 87°57′ पूर्वी देशान्तर के मध्य फैला है। इसका कुल क्षेत्रफल 79,714 वर्ग किमी है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत क्षेत्र घेरता है। 2011 के अनुसार झारखण्ड की जनसंख्या 3,29,66,238 थी पुरुष 1,69,31,688, महिला 1,60,34,550 भारत की कुल जनसंख्या का 2.72 था। (तालिका 1) झारखण्ड के उत्तर में बिहार, दक्षिण में ओडिशा (उड़ीसा), पूर्व में पश्चिम बंगाल तथा पश्चिम में छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश की स्थिति है।

तालिका 1

क्रम	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	कुल जनसंख्या, 2011 (करोड़ में)	भारत की कुल जनसंख्या का प्रतिशत
1	उत्तर प्रदेश	19.96	16.5
2	महाराष्ट्र	11.24	9.3
3	बिहार	11.38	8.6
4	पश्चिम बंगाल	9.13	7.6
5	आन्ध्र प्रदेश	8.47	7.0
6	तमिलनाडु	7.21	6.0
7	मध्य प्रदेश	7.26	6.0
8	राजस्थान	6.86	5.7
9	कर्नाटक	6.11	5.1
10	गुजरात	6.04	4.99
11	ओडिशा (उड़ीसा)	4.19	3.5
12	केरल	3.34	3.8
13	**झारखण्ड**	3.30	2.7
14	असम	3.12	2.6
15	पंजाब	2.77	2.3
16	हरियाणा	2.53	2.1
17	छत्तीसगढ़	2.55	2.1
18	दिल्ली	1.68	1.4
19	जम्मू तथा कश्मीर	1.25	1.0
20	उत्तराखण्ड	1.01	0.8
21	हिमाचल प्रदेश	0.69	0.6
22	त्रिपुरा	0.37	0.30
23	मणिपुर	0.27	0.22
24	मेघालय	0.30	0.24
25	नगालैण्ड	0.20	0.16
26		0.15	0.12
		0.14	0.11
			0.10

8:16 pm
Scanned with CamScanner

पाट प्रदेश के पूर्व का क्षेत्र रांची तथा हजारीबाग का पठार खण्ड उत्थान से प्रभावित होकर ऊपर उठ गया. पाट प्रदेश की ऊंचाई में और भी वृद्धि हुई। शिवालिक के निर्माण के समय तृतीय उत्थान से पाट प्रदेश, रांची तथा हजारीबाग के पठार को तीन ओर से घेरे हुए क्षेत्र (उत्तर, पूर्व तथा दक्षिण) तथा बाद छोटा नागपुर का पठार उत्थान से प्रभावित होकर ऊपर उठ गया। पाट प्रदेश तथा रांची-हजारीबाग के पठार की ऊंचाई में और भी वृद्धि हुई।

प्रत्येक पठार भ्रंश कगारों द्वारा एक-दूसरे से अलग है, जो इंगित करता है कि इसका निर्माण भ्रंशन तथा खण्ड उत्थान के परिणामस्वरूप हुआ। रांची का पठार उन्नत समप्राय मैदान का उत्तम उदाहरण है जहां अपेक्षाकृत समतल सतह पर एकाकी पहाड़ी (मोनाडनॉक) यहां-वहां बिखरी दिखाई पड़ती है।

भौतिक विभाग
(PHYSICAL DIVISIONS)

झारखण्ड का कुल क्षेत्रफल 79,714 वर्ग किमी है जो भारत के कुल क्षेत्र का 2.42% क्षेत्र घेरता है। उच्चावच के दृष्टिकोण से यह छोटा नागपुर के पठार के रूप में विख्यात रहा है जिसकी औसत ऊंचाई 700 फिट मिलती है परन्तु कुछ भाग 3,800' फीट से भी अधिक ऊंचे हैं तो कुछ क्षेत्र 250' फीट से भी कम ऊंचे हैं।

झारखण्ड प्राचीनतम पठार का हिस्सा है अतः लम्बे अपरदन एवं उत्थान के कारण यहां अत्यधिक कटे-फटे एवं ऊबड़-खाबड़ धरातल, अवशिष्ट पहाड़ियों, भ्रंश कगारों, दर्रा घाटियों इत्यादि का विकास हुआ है।

झारखण्ड का उच्चावच सम्बन्धी अध्ययन स्पष्ट करता है कि झारखण्ड (छोटा नागपुर) एक पठार नहीं, बल्कि पठारों के क्रम के रूप में फैला हुआ है तथा प्रत्येक पठार भ्रंश कगारों द्वारा एक-दूसरे से अलग है। 500 फीट की समोच्च रेखा इसे बिहार के मैदान से अलग करती है।

उच्चावच के दृष्टिकोण से झारखण्ड को निम्नलिखित प्रमुख इकाइयों में बांटा जा सकता है :

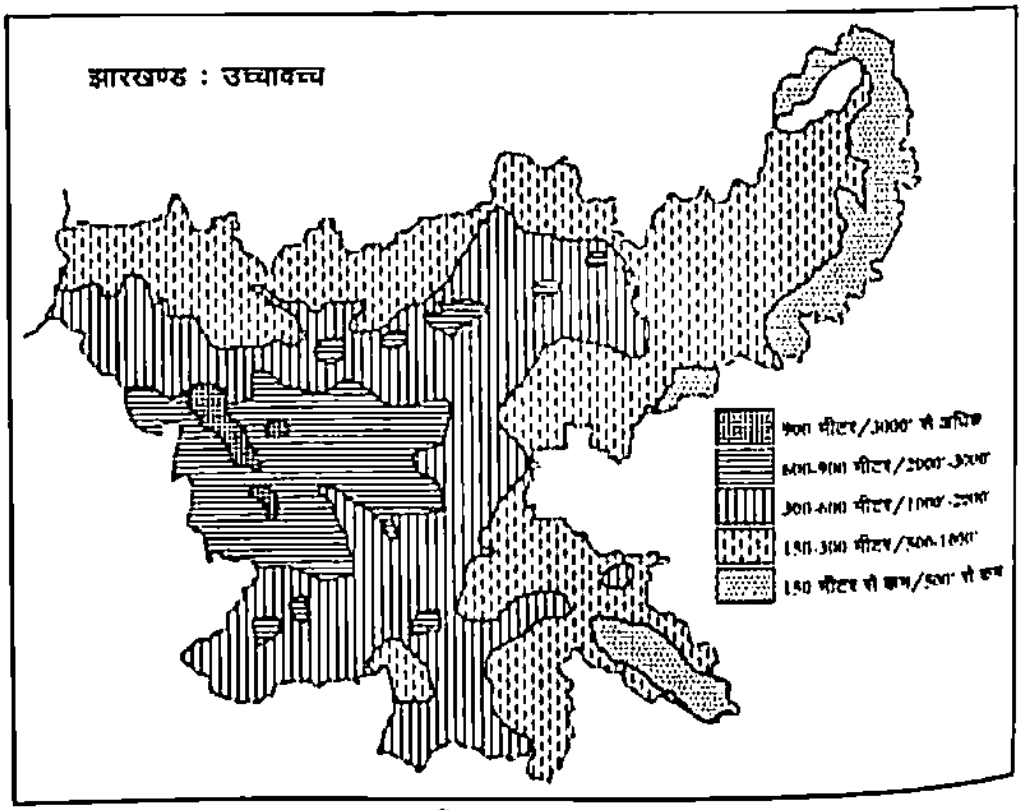

चित्र 4. उच्चावच्च

1. **पाट प्रदेश**—झारखण्ड का सबसे पश्चिमी एवं सबसे ऊंचा भाग पाट प्रदेश कहलाता है जिसका विस्तार पलामू तथा गढ़वा, उत्तरी-पश्चिमी लोहरदगा तथा उत्तरी गुमला में मिलता है (औसत ऊंचाई 2,500'–3,600')। नेतरहाट सबसे ऊंचा क्षेत्र है (387')। पाट वस्तुतः एक स्थानीय शब्द है जो सपाट चोटियों से युक्त पहाड़ियों को इंगित करता है, इस क्षेत्र में इक्कन लावा के अवशेष पाए जाते हैं।

Scanned with CamScanner

(आ) धारवाड़ क्रम की चट्टानें—आर्कियन काल में ही सम्बन्धित है और झारखण्ड का सबसे प्राचीन धरातलीय निर्माण है जो आज रूपान्तरित अवस्था में मिलता है। रूपान्तरण के कारण चट्टानें शिष्टोज प्रकृति में बदल गई हैं। क्वार्ट्जाइट, फाइलाइट, शिस्ट जैसी चट्टानें यहां पाई जाती है। आग्नेय अन्तर्भेदन के कारण कई क्षेत्रों में ग्रेनाइट का विकास भी हुआ है। धारवाड़ क्रम की चट्टानें झारखण्ड के दो क्षेत्रों में मिलती हैं।

प्रथम, पूर्वी एवं पश्चिमी सिंहभूम तथा सरायकेला के अधिकांश भाग, सिमडेगा तथा गढ़वा जिला के दक्षिण-पूर्वी भाग जहां अनेक प्रकार के धात्विक एवं अधात्विक खनिज (लौह अयस्क, तांबा, क्रोमाइट, यूरेनियम इत्यादि) पाये जाते हैं।

द्वितीय हजारीबाग-कोडरमा का क्षेत्र जहां माइका शीस्ट की प्रधानता है तथा अभ्रक के उत्पादन के लिए यह विश्व-विख्यात है।

आर्कियन काल में ही लावा प्रवाह के कारण बेसिक आग्नेय चट्टानों का विकास हुआ जो रांची तथा सिंहभूम के सीमावर्ती क्षेत्र में दालमा श्रेणी के रूप में फैला हुआ है, इसके कुछ भाग अपक्षय एवं अवक्षालन के कारण लैटेराइट में बदल गए हैं।

सिंहभूम में मिलने वाली कोल्हान सीरीज की चट्टानों को कई विद्वान कुड़प्पा क्रम में सम्बन्धित मानते हैं जहां बलुआ पत्थर, कांग्लोमरेट शेल तथा चूना पत्थर के साथ क्वार्ट्जाइट पाया जाता है।

2. विंध्यन क्रम की चट्टानें—प्रीकैम्ब्रियन काल के भूगर्भिक निर्माण में इसे सम्मिलित किया जाता है जिसका विकास सीमित क्षेत्र में सोन के दक्षिण में गढ़वा जिला के उत्तरी भाग में मुख्यतः हुआ है। यहां बलुआ पत्थर, क्वार्ट्जाइट, चूना पत्थर तथा डोलोमाइटिक चूना पत्थर पाए जाते हैं। चट्टानें शैलिज परतों के रूप में मिलती हैं जिसमें जीवाश्म नहीं पाया जाता है।

कैम्ब्रियन, ऑरडोविसियन, सिलुरियन तथा डेवोनियन काल की चट्टानें झारखण्ड में दिखाई नहीं पड़तीं।

3. गोंडवाना क्रम की चट्टानें—पश्चिम में हुटार से पूर्व में झरिया तक सम्पूर्ण दामोदर घाटी में ऊपरी कार्बोनिफेरस से लेकर निचली जुरैसिक काल तक चलने वाले तलछटीकरण के कारण गोंडवाना क्रम की चट्टानों का विकास हुआ है जहां बलुआ पत्थर तथा शेल के मध्य कोयला की विशाल परतें पाई जाती हैं। दामोदर घाटी वस्तुतः दरार घाटी का उदाहरण है जिसका विकास एक-दूसरे के समानान्तर विकसित भ्रंशों के मध्य भाग के नीचे धंस जाने के कारण हुआ है।

दामोदर घाटी के अलावा उत्तरी कोयल घाटी, गिरिडीह तथा राजमहल की पहाड़ियों में भी गोंडवाना क्रम की चट्टानें मिलती हैं।

4. राजमहल ट्रैप तथा डक्कन लावा—संथाल परगना के क्षेत्र में जुरैसिक काल में लावा प्रवाह के कारण राजमहल ट्रैप का विकास हुआ है जबकि क्रिटेशियस से इयोसिन काल तक रुक-रुक कर दरारों से होने वाले प्रवाह के कारण डक्कन लावा क्रम विकसित हुआ जिसके अवशिष्ट भाग पाट प्रदेश में मिलते हैं। अपक्षय तथा अवक्षालन के कारण यह लैटेराइट एवं बॉक्साइट में बदल चुका है।

नूतन जमाव गंगा के दक्षिण में साहेबगंज के उत्तरी तथा पूर्वी भाग, पाकुड़ के पूर्वी किनारे में पुराने एवं नवीन जलोढ़ के रूप में पाये जाते हैं।

टर्शियरी भू-हलचल तथा झारखण्ड प्रदेश में तीन क्रमिक उत्थान

झारखण्ड की वर्तमान धरातलाकृति के विकास में टर्शियरी भू-हलचल की मुख्य भूमिका रही है फलतः यहां भ्रंशन तथा खण्ड उत्थान (Block Uplift) के कारण पठारों के स्पष्ट क्रम का विकास हुआ है।

टर्शियरी काल के पूर्व लम्बे अपरदन के कारण झारखण्ड का क्षेत्र समप्राय मैदान में बदल चुका था। हिमालय भू-हलचल के अप्रत्यक्ष प्रभाव से महान हिमालय के निर्माण के समय (इयोसीनकाल) झारखण्ड का सबसे पश्चिमी भाग (पाट प्रदेश) पोरबतुमा रूप में ऊपर उठ गया। लघु हिमालय के निर्माण के समय मायोसीन काल (Miocene) में

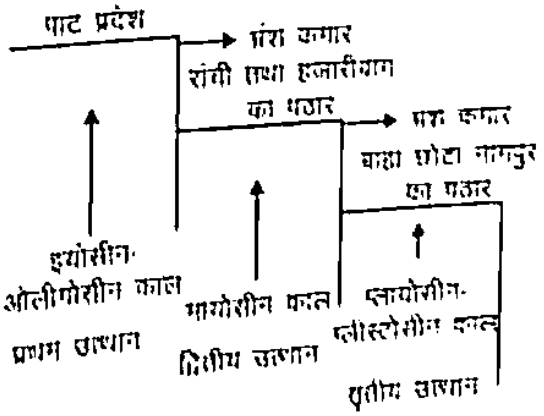

चित्र 3.

8:16 pm
Scanned with CamScanner

झारखण्ड अपने खनिज संसाधन के कारण न सिर्फ भारत में बल्कि संपूर्ण विश्व में विख्यात रहा है। अपने खनिजों की लम्बी सूची के कारण भारत में झारखण्ड की पहचान खनिजों के भण्डारगृह के रूप में स्थापित हो चुकी है। ऊर्जा संसाधन में कोयला की प्राप्ति यहां से होती है तथा भारत में कोक उत्पादन योग्य कोयला के कुल भण्डार का 95 प्रतिशत से अधिक झारखण्ड क्षेत्र में संचित है। यहां का कोयला 'गोण्डवाना कोक' कहलाता है, क्योंकि गोण्डवाना क्रम की चट्टानों में उनके भण्डार संचित हैं। झारखण्ड में यूरेनियम, थोरियम, मोनाजाइट, जिरकन जैसे आण्विक खनिज भी पाए जाते हैं। यहां मिलने वाले धात्विक खनिजों में लौह-अयस्क, तांबा, बॉक्साइट, मैंगनीज, सीसा इत्यादि प्रमुख हैं, जबकि अधात्विक खनिजों में अभ्रक, एम्बेस्टॉस, चूना पत्थर, डोलोमाइट, चीनी मिट्टी आदि का स्थान महत्वपूर्ण है। स्पष्ट है कि झारखण्ड अपनी भूगर्भिक संरचना, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, जनजातीय जनसंख्या तथा खनिजों के दृष्टिकोण से संपूर्ण भारत में विशिष्ट स्थान रखता है। यदि नियोजन की प्रक्रियाओं को सावधानीपूर्वक मूर्त रूप दिया जाय तो आने वाले समय में यह भारत का सबसे समृद्ध राज्य बन सकता है, क्योंकि कृषि, खनन, उद्योग, इत्यादि के विकास की सारी भौतिक दशाएं यहां उपलब्ध हैं।

भूगर्भिक संरचना
(GEOLOGICAL STRUCTURE)

भूगर्भिक संरचना किसी भी प्रदेश की धरातलाकृतिक विशेषताओं को निर्धारित करती है और झारखण्ड इसका अपवाद नहीं है। इसे विश्व के सबसे प्राचीनतम भूखण्डों में सम्मिलित किया जाता है अतः यह लम्बे काल से अपरदन से प्रभावित होता रहा है, यहां पंजन तथा खण्ड उत्थान की क्रियाएं हुई हैं जिससे विभिन्न क्षेत्र चौरस्तूप आकृति में ऊपर उठ गए हैं। पंजन के कारण भ्रंश कगार, दरार घाटी इत्यादि का विकास हुआ है। अधिकांश भाग में आग्नेय चट्टानों की उपस्थिति मिलती है जो अधिकांशतः रूपान्तरित अवस्था में मिलती हैं।

झारखण्ड के प्रमुख भूगर्भिक निर्माण

1. **आर्कियन निर्माण**—झारखण्ड के 90% क्षेत्र में आर्कियन काल (3600 मि. से 2500 मि. वर्ष पुराने) की चट्टानें पाई जाती हैं जिसका विश्लेषण दो उपशीर्षकों में किया जा सकता है :

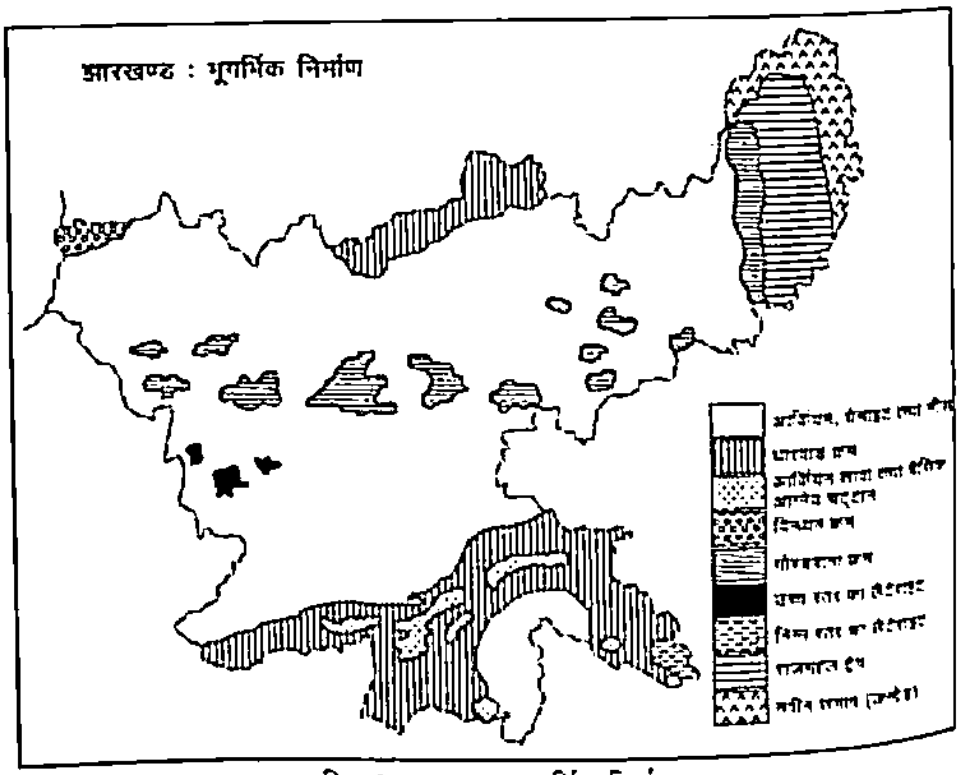

चित्र 2. झारखण्ड : भूगर्भिक निर्माण

(अ) **आर्कियन ग्रेनाइट तथा नीस**—झारखण्ड की आधारीय संरचना का निर्माण करती है। राजी, पुरुलिया, सिंहभूम इत्यादि के अधिकांश भागों में आर्कियन ग्रेनाइट एवं नीस पाए जाते हैं। रूपान्तरण के कारण ग्रेनाइट नीस में बदल गया है जिसे बंगाल अथवा छोटा नागपुर नीस कहा जाता है। ये पैतृक चट्टानें भी कहलाती हैं क्योंकि अन्य भूगर्भिक निर्माणों के लिए इन्होंने स्रोत का कार्य किया है।

Scanned with CamScanner

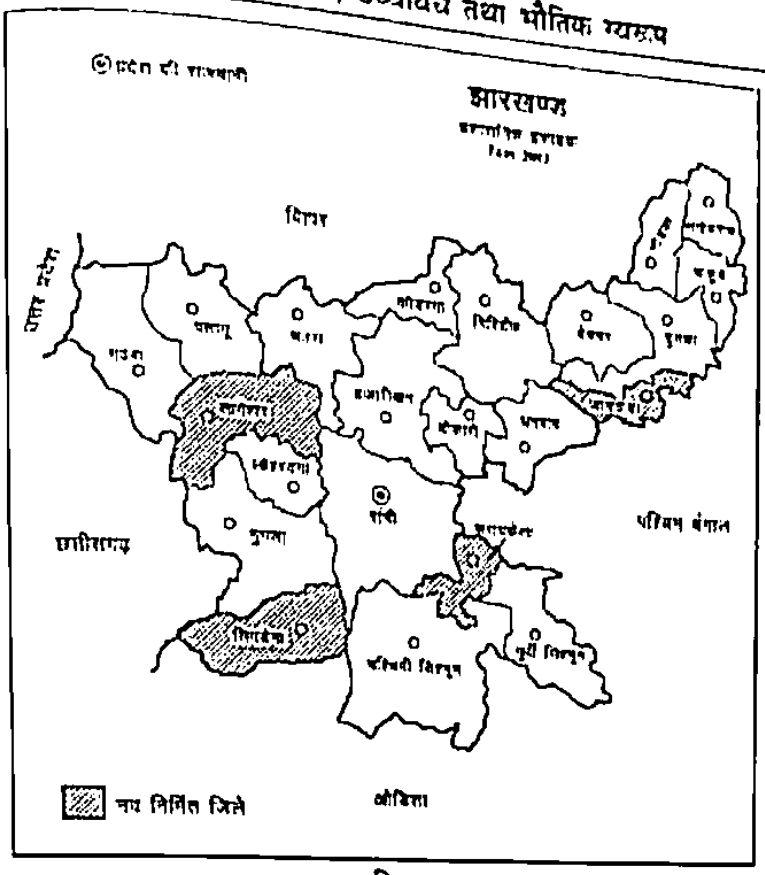

चित्र 1

भूखण्ड है जो अपनी उत्पत्ति के समय से ही समुद्र तल से ऊपर रहा है। फलतः लम्बे समय से अनाच्छादन की क्रिया द्वारा प्रभावित हुआ। ऐसा माना जाता है कि टरशियरी काल से पहले यह सम्प्राय मैदान (पेनीप्लेन) में बदल चुका था। बाद में हिमालय के निर्माण के समय हुए क्रमिक उत्थान से पुनः ऊपर उठ गया।

झारखण्ड का पश्चिमी भाग सबसे ऊंचा है जो 'पाट प्रदेश' कहलाता है। यद्यपि झारखण्ड का सबसे ऊंचा बिन्दु पारसनाथ की पहाड़ी है जिसकी ऊंचाई 1,365 मीटर है। इसकी स्थिति बाह्य छोटा नागपुर पठार में है। पाट प्रदेश से पूर्व की ओर क्रमशः रांची तथा हजारीबाग का पठार एवं बाह्य छोटा नागपुर के पठार की स्थिति है। पाट प्रदेश जहां 900 मीटर से अधिक ऊंचा है वहीं पाकुड़ तथा साहेबगंज के पूर्वी भागों, राजमहल के समीपवर्ती क्षेत्र की ऊंचाई 150 मीटर से भी कम मिलती है। चाईबासा का क्षेत्र भी अपेक्षाकृत निम्न मैदान के रूप में फैला है।

जलवायु के दृष्टिकोण से झारखण्ड उष्णकटिबन्धीय मानसून जलवायु का क्षेत्र है जहां औसत वार्षिक वर्षा 140 सेमी के आसपास होती है। नेतरहाट के आसपास के क्षेत्र 160 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा प्राप्त करते हैं, जबकि पलामू तथा गढ़वा के उत्तरी भाग (चतरा आदि) के कई क्षेत्रों में 100 सेमी या उससे भी कम वर्षा होती है। प्राकृतिक वनस्पति पतझड़ किस्म की है जिसे उष्णकटिबन्धीय मानसून पतझड़ वन के रूप में रखा जाता है। कुल क्षेत्रफल के लगभग 29 प्रतिशत पर वनों की स्थिति है, परन्तु वनों का वितरण असमान मिलता है, क्योंकि चतरा के कुल क्षेत्रफल के 50 प्रतिशत से अधिक भाग पर वनों की स्थिति मिलती है तो साहेबगंज के तीन प्रतिशत से भी कम में वनों का विस्तार पाया जाता है। अपने विशिष्ट वनोत्पाद के कारण झारखण्ड पूरे भारत में प्रसिद्ध है तथा लोहे के उत्पादन में प्रथम स्थान रखता है।

झारखण्ड अपनी जनजातीय जनसंख्या के कारण भी पूरे भारत में जाना जाता है। वस्तुतः झारखण्ड की पहचान प्रारम्भ से ही जनजातीय पट्टी के रूप में रही है। 1991 की जनगणना के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या का 27.7 प्रतिशत से अधिक जनजातीय है। झारखण्ड में 30 प्रकार के जनजातीय समुदाय निवास करते हैं। हाल के वर्षों में अन्य दो समुदायों को भी जनजातीय समुदाय में सम्मिलित किया गया है; अतः झारखण्ड में जनजातीय समुदायों की संख्या 32 हो चुकी है। 9 जनजातियों को आदिम जनजाति की श्रेणी में रखा गया है। जनसंख्या के दृष्टिकोण से संथाल प्रथम स्थान रखते हैं जिसके बाद क्रमशः उरांव, मुण्डा तथा हो का स्थान है। सबसे अधिक जनजातीय जनसंख्या गुमला में मिलती है, क्योंकि यहां की कुल जनसंख्या का 70 प्रतिशत से अधिक (1991) जनजातीय है, जबकि धनबाद में जनजातीय जनसंख्या का अनुपात सबसे कम पाया जाता है।

8:10 pm
Scanned with CamScanner

29	चण्डीगढ़	0.11	0.09
30	मिजोरम	0.11	0.09
31	सिक्किम	0.06	0.05
32	अण्डमान तथा निकोबार	0.04	0.03
33	दादर तथा नागर हवेली	0.03	0.03
34	दमन तथा दीव	0.02	0.02
35	लक्षद्वीप	0.01	0.01

2011 की जनगणना तक झारखण्ड में 5 प्रमण्डल, 24 जिला 38 सब डिवीजन, 260 सामुदायिक विकास प्रखण्ड, 228 नगर, 11 नगरीय सम्मूहन तथा 32,394 राजस्व गांव हैं। रांची सबसे अधि क जनसंख्या का जिला तथा लोहरदगा सबसे कम जनसंख्या का जिला है, जबकि धनबाद में जनसंख्या का घनत्व सबसे अधिक एवं सिमडेगा में सबसे कम मिलता है। प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की सबसे अधिक संख्या पश्चिमी सिंहभूम तथा सबसे कम धनबाद में मिलती है। अधिकतम साक्षरता दर रांची जिला में तथा न्यूनतम साक्षरता दर पाकुड़ में पाई गई है। निम्नलिखित तालिका झारखण्ड के जिलों के मुख्य तथ्यों को स्पष्ट करती है—

जिला	जनसंख्या	राज्य की जनसंख्या का %	पुरुष	महिला	जनगणना 2011			साक्षरता दर % में		दशकीय वृद्धि % 2001-2011
					प्रति वर्ग किमी. घनत्व	लिंग अनुपात	कुल	पुरुष	महिला	
1. रांची	29,12,022	8.83	14,93,376	14,18,646	557	950	77.13	85.63	68.20	23.90
2. धनबाद	26,82,662	8.14	14,05,847	12,76,815	1,284	908	75.71	85.68	64.70	11.91
3. गिरिडीह	24,45,203	7.42	12,58,607	11,86,596	497	943	65.12	79.08	50.33	24.31
4. पूर्वी सिंहभूम	22,91,032	6.94	11,75,696	11,15,336	648	949	76.13	84.51	67.33	15.53
5. बोकारो	20,61,918	6.25	10,76,270	9,85,648	716	916	73.48	84.50	61.46	15.99
6. पलामू	19,36,319	5.87	10,03,876	9,32,443	381	929	65.50	76.27	53.87	25.94
7. हजारीबाग	17,34,005	5.25	8,91,179	8,42,826	403	946	70.48	81.15	59.25	25.75
8. प. सिंहभूम	15,01,619	4.56	7,49,314	7,52,305	209	1,004	59.54	72.18	47.01	21.69
9. देवघर	14,91,879	4.53	7,76,741	7,15,138	602	921	66.34	79.19	52.39	28.02
10. गढ़वा	13,22,387	4.01	6,83,984	6,38,403	327	933	62.18	74.00	49.43	27.31
11. दुमका	13,21,096	4.01	6,69,240	6,51,856	300	974	62.54	75.17	59.60	19.39
12. गोड्डा	13,11,382	3.98	6,78,504	6,32,879	622	933	57.68	69.56	44.90	25.14
13. साहेबगंज	11,50,038	3.49	5,90,390	5,59,648	719	948	53.73	62.65	44.31	23.09
14. सरायकेला खरसांवा	10,63,458	3.23	5,43,232	5,20,226	390	958	69.85	81.01	56.19	25.29
15. खूंटी	10,42,304	3.16	5,34,209	5,08,094	275	951	62.14	71.85	51.91	26.95
16. गुमला	10,25,656	3.11	5,14,730	5,10,926	193	993	66.92	76.87	56.97	23.31
17. रामगढ़	9,49,159	2.88	4,94,037	4,55,122	684	921	73.92	83.51	63.49	13.06
18. पाकुड़	8,99,200	2.73	4,53,101	4,46,099	498	985	50.17	59.02	41.23	25.15
19. जामताड़ा	7,90,207	2.40	4,03,450	3,86,757	439	959	63.73	76.85	50.06	21.02
20. लातेहार	7,25,673	2.20	3,69,534	3,56,139	200	964	61.23	71.80	50.26	29.31
21. कोडरमा	7,17,169	2.18	3,67,952	3,49,217	427	941	68.35	81.25	54.77	32.69
22. सिमडेगा	5,99,813	1.82	2,99,905	2,29,908	160	1,000	67.57	75.84	59.38	16.62
23. खूंटी	5,30,299	1.61	2,65,939	2,64,360	215	994	64.51	75.33	53.71	21.58
24. लोहरदगा	4,61,738	1.40	2,32,575	2,29,163	310	985	68.29	78.62	57.86	26.67
झारखण्ड	3,29,66,238	100.00	1,69,31,688	1,60,34,550	414	947	67.63	78.48	56.21	22.14

भूगर्भशास्त्रियों का ऐसा मानना है कि प्रायद्वीपीय भारत के साथ संलग्न होते हुए मेसोजोइक युग में झारखण्ड गोण्डवानालैण्ड का एक हिस्सा था। क्रिटेशियस काल में प्रायद्वीपीय भारत अफ्रीका से अलग होकर 16 सेमी प्रति वर्ष की दर से उत्तर की ओर प्रवाहित हुआ तथा लगभग 60 मिलियन वर्ष पूर्व यूरेशिया भूखण्ड से जाकर मिल गया जिसके परिणामस्वरूप टेथिस सागर के मलवा में वलन के कारण हिमालय का निर्माण हुआ। इसी समय विभिन्न प्रकार की भूगर्भिक हलचल के कारण झारखण्ड में क्रमिक उत्थान की क्रियाएं हुईं जिससे यहां पठारों के अनेक क्रम विकसित हुए हैं। वस्तुतः झारखण्ड विश्व का प्राचीनतम

8:16 pm
Scanned with CamScanner